अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 2 मार्च 2019

विफलता ज्यादा समझदारी के साथ फिर से शुरुआत करने का एक अवसर है...
...हेनरी फोर्ड, फोर्ड मोटर कंपनी के संस्थापक

अपने गठन के पांच दशक बाद ही सही, ओआईसी को अगर यह एहसास हुआ है कि सिर्फ पाकिस्तान के कहने पर भारत की अनदेखी नहीं की जा सकती, तो इससे बेहतर और कुछ नहीं हो सकता।

अबुधाबी में नई शुरुआत

ओआईसी यानी इस्लामी देशों के संगठन की बैठक में पहली बार, वह भी विशेष मेहमान के तौर पर आमंत्रित किया जाना भारत के लिए जितने सम्मान की बात है, इसके उद्घाटन सत्र में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का संबोधन उतना ही उल्लेखनीय और प्रासंगिक था। उन्होंने इस आमंत्रण को भारत की बहुलतावादी संस्कृति का सम्मान तो बताया ही, मुस्लिम देशों के साथ हमारे शानदार रिश्ते का भी अपने भाषण में जिक्र किया। पाकिस्तान के साथ तल्ख रिश्ते की पृष्ठभूमि में अबुधाबी में सुषमा स्वराज की मौजदूगी भारत के लिए बड़ी कूटनीतिक सफलता इसलिए भी है, क्योंकि पाकिस्तान की आपत्ति के बावजूद मेजबान संयुक्त अरब अमीरात ने भारत को दिया गया न्योता रद्द नहीं किया, नतीजतन उस पाकिस्तान को ही बैठक से अलग होने पर विवश होना पड़ा, जो ओआईसी के संस्थापक सदस्यों में से है। मानो यही किरकिरी कम न हो, सुषमा स्वराज ने अपने भाषण में पाकिस्तान का नाम लिए बगैर आतंकवाद पर करारा हमला बोलकर उसके जले पर नमक छिड़का। आतंकवाद पर अमेरिका और फ्रांस जैसे देशों के सख्त रुख के बाद ओआईसी द्वारा पाकिस्तान को दरकिनार कर भारत को बुलाना इस्लामाबाद के लिए बड़ा झटका है, क्योंकि अब तक यही संगठन उसका साथ देता आया था। दूसरी ओर, भारत के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि इसलिए है, क्योंकि तीसरी सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश होने के बावजूद भारत को ओआईसी में पहले कभी नहीं बुलाया गया, जबकि भारत से कम मुस्लिम आबादी वाले कई देशों को उसमें पर्यवेक्षक का दर्जा हासिल है। ज्यादातर मुस्लिम देशों से बेहतर रिश्ता होने के बावजूद पाकिस्तान की शह पर ओआईसी ने भारत को न केवल अलग-थलग रखा, बल्कि कश्मीर पर हमारे रुख की आलोचना की, बालाकोट में हवाई हमले की आलोचना करने वाला यह अकेला संगठन था। जबकि इसके ज्यादातर सदस्य देशों से हमारे बेहतर रिश्ते

हैं। संयुक्त अरब अमीरात से हमारी प्रत्यर्पण संधि है, और उसने पिछले दिनों अगस्ता वेस्टलैंड से जुड़े क्रिश्चियन मिशेल को भारत प्रत्यर्पित किया था, तो बांग्लादेश ओआईसी में भारत को शामिल करने की बात कह चुका है। अपने गठन के पांच दशक बाद ही सही, ओआईसी को अगर यह एहसास हुआ है कि सिर्फ पाकिस्तान के कहने पर भारत जैसे देश की अनदेखी नहीं की जा सकती, तो इससे स्वागतयोग्य और कुछ नहीं हो सकता।

वार्ता की विफलता के बाद

एक खराब सौदे को स्वीकार करने के बजाय राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा मुलाकात को बेनतीजा खत्म कर देना सही था, लेकिन देखने की बात है कि आगे क्या होता है, क्योंकि कूटनीति के लिए अब भी गुंजाइश बची है, जो दुनिया को बेहतर बनाती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने एक खराब परमाणु समझौते को स्वीकार करने के बजाय किम जोंग उन के साथ अपने शिखर सम्मेलन को खत्म कर सही फैसला किया, लेकिन परिणाम यह बताते हैं कि पिछले वर्ष किम के साथ अपनी पहली शिखर मुलाकात में वह धोखा खा गए थे। जो भी हो, प्रतिभाशाली ट्रंप जब आईने में अपना चेहरा देखते होंगे, तो जानते होंगे कि 'सौदेबाजी की कला' उनके वश की बात नहीं है।

इस बैठक में किम ने कुछ परमाणु स्थलों को बंद करने के बदले में उत्तर कोरिया पर से सभी प्रतिबंधों को हटाने की मांग की। यह कोई अच्छा सौदा नहीं था और ट्रंप ने इसे स्वीकार करने के बजाय बैठक खत्म करके सही किया।

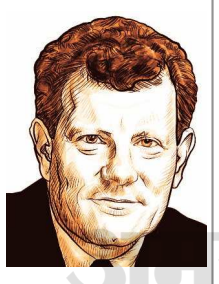

निकोलस क्रिस्टॉफ

ट्रंप ने कहा कि 'वास्तव में वे चाहते थे कि हम पूरी तरह से प्रतिबंध हटा लें, लेकिन हम ऐसा नहीं कर सकते थे।' आगे उन्होंने कहा कि 'कभी-कभी आपको कुछ चीजों को छोड़ देना पड़ता है।'

राष्ट्रपति रीगन रूस के साथ हथियार नियंत्रण समझौते को स्वीकार करने के बजाय आइसलैंड के रेकजाविक में आयोजित शिखर सम्मेलन से बाहर निकल गए थे, क्योंकि उस सौदे को उन्होंने त्रुटिपूर्ण माना था। एक वर्ष बाद रूस कुछ बेहतर शर्तों के साथ लौटा और तब जाकर सौदा हुआ- और हम उम्मीद कर सकते हैं कि इस बार भी कुछ वैसा ही होगा।

फिर भी, आगे कई महत्वपूर्ण जोखिम हैं। सबसे अहम बात यह है कि उत्तर कोरिया परमाणु हथियारों और बैलिस्टिक मिसाइलों का फिर से परीक्षण कर सकता है, इससे बहुत ज्यादा तनाव बढ़ेगा और एक बार फिर से युद्ध एवं अस्थिरता को लेकर चिंता पैदा होगी।

दुर्भाग्य से, उत्तर कोरिया एक अन्यथा महत्वहीन देश है, जो केवल तभी ध्यान आकर्षित करता है, जब वह भड़काऊ व्यवहार करता है।

इसलिए उसके नेताओं ने यह मान लिया है कि उसकी सबसे बड़ी शक्ति मिसाइल दागना, विस्फोटकों का धमाका करना या परमाणु परिसरों को चालू करना है।

बेशक इस मामले में समझौते न करके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सही किया, लेकिन लगता है कि उन्होंने इस शिखर सम्मेलन को बहुत खराब ढंग से संचालित किया। विशेष रूप से इसलिए कि उन्होंने संकेत दिया था कि वह उत्सुकता से यह समझौता करना चाहते हैं और उस 'शानदार सफलता' की संभावना थी, इन सबने शायद किम को इस विश्वास के साथ मांगों को उठाने के लिए प्रेरित किया कि वह ट्रंप को मना लेंगे।

सामान्य राष्ट्रपतियों के साथ शिखर सम्मेलन के समझौते पर समय से पहले ही सहमति व्यक्त की जाती है। जैसा कि एक अनुभवी राजनयिक ने कहा है कि राष्ट्रपति अपनी टोपियों से खरगोशों को इसलिए निकाल पाते हैं, क्योंकि इससे पहले राजनयिक काफी मेहनत कर टोपियों में खरगोशों को रखते हैं। लेकिन ट्रंप ने उस सावधानीपूर्ण कूटनीतिक प्रक्रिया के लिए कभी धैर्य नहीं रखा, बल्कि व्यक्तिगत संबंधों से पैदा होने वाली सफलताओं पर ज्यादा भरोसा किया और साफ है कि इस बार उनका भरोसा स्पष्ट रूप से गलत था।

उत्तर कोरियाई पक्ष ने अमेरिका के विशेष दूत स्टीफन बेगुन द्वारा अनुमानित शिखर सम्मेलन के नतीजों को पहले से मानने से इनकार कर दिया, क्योंकि किम ने सोचा कि वह हनोई में राष्ट्रपति ट्रंप को चतुराई में मात दे सकते हैं, जैसा कि उन्होंने नौ महीने पहले सिंगापुर में किया था।

नवीनतम बातचीत का इस तरह बेनतीजा खत्म होना यह भी रेखांकित करता है कि पहले की बैठक में ट्रंप कितने गुमराह थे। वह यह समझ नहीं पाए कि किम ने 'गैर-परमाणवीकरण' का वह अर्थ लगाया, जो अमेरिका के मायने से अलग था और उन्होंने किम को वैधता का एक बड़ा तोहफा दिया, जो शिखर सम्मेलन के साथ उन्हें मिला, वह भी बदले में बिना कुछ हासिल किए।

ट्रंप ने किम की जिस तरह से प्रशंसा की थी, वह बेहद अरुचिपूर्ण था। उन्होंने किम को अपना दोस्त और महान नेता बताया था और जोर देकर कहा था कि किम ने उन्हें 'खूबसूरत पत्र' भेजे हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि हम एक दूसरे से प्यार करते हैं। निर्दयी तानाशाह से संवाद करना उचित है, लेकिन उसकी खुशामद करना हमारे मूल्यों के साथ विश्वासघात है।

वियतनाम में ट्रंप ने किम को संभवतः यह भी दिखाया होगा कि प्रेस की स्वतंत्रता कैसी दिखती है। जबकि ह्वाइट हाउस ने चार अमेरिकी पत्रकारों को डिनर से सिर्फ इसलिए वंचित कर दिया था, क्योंकि उनमें से दो ने ट्रंप से सवाल करने की कोशिश की थी।

फिर भी, अगर आगे भारी तनाव का जोखिम है, तो कुछ समय बाद उत्तर कोरिया के साथ रिश्तों में प्रगति के लिए रास्ता बनाना भी संभव है। मैं उन संदेहों से सहमत हूं, जो मानते हैं कि अपने परमाणु हथियार भंडार सौंपने का किम का कोई इरादा नहीं है (जैसा कि 2017 में उत्तर कोरिया की मेरी यात्रा के दौरान वहां के लोगों ने मुझे बताया था), फिर भी कूटनीति के लिए अब भी गुंजाइश बची है, जो दुनिया को बेहतर बनाती है।

विशेष रूप से किम विस्फोटक आयुधों और मिसाइलों के परीक्षण पर प्रतिबंध तथा योंगब्योन में परमाणु ईंधन के उत्पादन ठप करने पर सौदेबाजी करना चाहता है और ये बहुत कीमती नहीं, तो योग्य लक्ष्य जरूर हैं। अंतर-कोरियाई परियोजनाओं पर प्रतिबंध से राहत उचित मूल्य होगा, जो उसे बाहरी दुनिया में हिस्सेदारी का मौका देगा और शासन के अधिकार को कमतर करेगा। इस तरह के सीमित सौदे आगामी कूटनीति का लक्ष्य होना चाहिए और दक्षिण कोरिया को राष्ट्रपति मून जे इन (जिन्होंने उत्तर कोरिया और पश्चिम के बीच शांति प्रक्रिया शुरू करने में मदद की) अमेरिकी समर्थन से इसे आगे बढ़ाने के लिए बेहतर व्यक्ति हैं।

© The New York Times 2019

बचपन की मीठी यादें और 'पीरियड्स' का निर्माण

अपनी कहानी

>> रायका जेहताबची

जब मुझे पहली बार यह पता चला कि माहवारी के कारण बच्चियां स्कूल तक छोड़ देती हैं, तो मुझे हैरत हुई थी। लेकिन अब हालात बदल रहे हैं और ग्रामीण इलाकों में भी सैनेटरी नैपकिन की मांग बढ़ रही है।

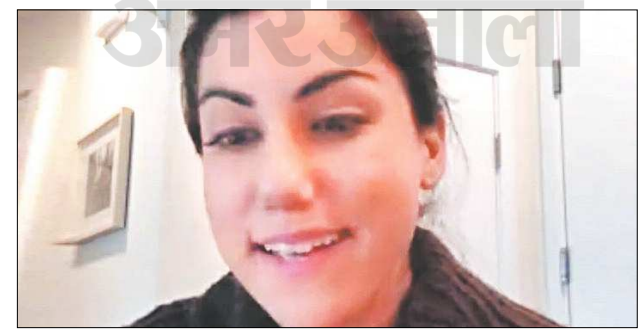

अभी मैं 25 वर्ष की हूं और हाल ही में मैंने सदर्न कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ सिनेमैटिक आर्ट्स से स्नातक किया है। अभी मैं लास एंजिलिस में रह रही हूं, लेकिन मेरा बचपन दक्षिण कैलिफोर्निया में बीता है और वहां की कुछ मीठी यादें जुड़ी हुई हैं। मुझे याद है कि जब कभी मुझे या मेरी बहन को पीरियड आते थे, तो पिता हमें चॉकलेट लाकर देते थे। हमारे लिए यह बहुत सामान्य था। तकरीबन एक दशक बाद जब माहवारी पर फिल्म बनाने के सिलसिले में मैं भारत आई, तब तक मुझे एहसास नहीं था कि हम कितने सौभाग्यशाली थे, क्योंकि दुनिया में आज भी माहवारी को लेकर बहुत-सी वर्जनाएं हैं।

टूट रही हैं बेड़ियां

पीरियड्सः एंड ऑफ सेंटेंस ने माहवारी के कारण महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव को लेकर वैश्विक चिंता को रेखांकित किया है। बहुत से देशों में इसे लेकर महिलाओं और लड़कियों को असमानता और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। अमेरिका जैसे देश में भी सारी महिलाओं तक सैनेटरी पैड की पहुंच नहीं है। लेकिन अब इस पर खुलकर बातें की जा रही हैं। एक सहयोगी के जरिये मुझे पता चला कि दुनिया में माहवारी एक बड़ी समस्या है। खासतौर से विकासशील देशों में लड़कियों को माहवारी के कारण स्कूल तक छोड़ना पड़ जाता है। यहां तक स्वास्थ्यवर्धक महिला उत्पादों तक भी उनकी पहुंच नहीं है।

पहली ही डाक्यूमेंटरी को ऑस्कर

पीरियड्स... मेरी पहली डाक्यूमेंटरी है। यह फिल्म हमने भारत की राजधानी दिल्ली से 60 किलोमीटर दूर स्थित हापुड़ में बनाई थी। इस पूरी फिल्म की शूटिंग भारत में की गई थी। मुश्किल यह थी कि न तो मैं और न ही अमेरिका के मेरे सहयोगी हिंदी बोल पाते हैं। इसमें इस फिल्म के निर्माण से जुड़ी हमारी भारतीय सहयोगी मंदाकिनी कक्कड़ ने हमारी मदद की। उन्होंने हमारे लिए दुभाषिये का काम किया। हमने जब फिल्म की शूटिंग शुरू की थी, तब गांव में मुरुगननाथम (पैड मैन) की डिजाइन की एक ही मशीन थी। लेकिन अब पूरे भारत में सैनेटरी नैपकिन बनाने की मशीनें कुटीर उद्योग की तरह फैल गई हैं। हमें यह देखकर अच्छा लगा कि ग्रामीण महिलाएं अब माहवारी से जुड़ी स्वच्छता को लेकर जागरूक हो रही हैं और गांवों में सैनेटरी नैपकिन की मांग बढ़ रही है।

जड़ों से जुड़ाव

मैंने अब तक सिर्फ तीन फिल्मों का निर्देशन किया है। मैं अमेरिकी-ईरानी माता-पिता की संतान हूं। शायद यह ईरानी जड़ों की वजह से है, मुझे ईरानी कहानियां और महिलाओं से संबंधित कहानियां सुनना-सुनाना अच्छा लगता है। मैंने निर्देशक के तौर पर पहली शॉर्ट फिल्म ईरानी भाषा में ही बनाई थी। *मदारन* नामक यह फिल्म दुनिया भर के फिल्म उत्सवों में दिखाई जा चुकी है, जिनमें प्रतिष्ठित एनएफएफवाई (नेशनल फिल्म फेस्टिवल फॉर टैलेंटेड यूथ) शामिल है। एनएफएफवाई उभरते निर्देशकों की फिल्मों का सबसे बड़ा उत्सव है। इस फिल्म को अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले हैं। यहां तक कि 2016 में 89 वें अकादमी अवार्ड (ऑस्कर) के लिए भी वह नामांकित की गई थी। *मदारन* एक ऐसी ईरानी मां की कहानी है, जो इस दुविधा में होती है कि वह अपने बेटे के हत्यारे को माफ कर दे या उसे मार डाले। अंततः वह उसे माफ कर देती है।

-ऑस्कर जीतने वाली डाक्यूमेंटरी की निर्देशक के साक्षात्कारों पर आधारित।

फैक्ट फाइल

जिनेवा संधि

>> जेनेवा कन्वेंशन

22 अगस्त, 1864 को पहले जिनेवा कन्वेंशन का जन्म हुआ।

भारतीय वायुसेना के विंग कमांडर अभिनंदन की वापसी को लेकर पाकिस्तान पर भारतीय कूटनीतिक दबाव के साथ ही जिनेवा संधि का भी दबाव रहा है। 'जिनेवा कन्वेंशन' जिसे सामान्य तौर पर जिनेवा संधि के रूप में जाना जाता है, उसमें चार संधियां और तीन अतिरिक्त प्रोटोकॉल शामिल हैं, जिनका उद्देश्य युद्ध के समय मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून के मानक तैयार करना है। वर्तमान में जो जिनेवा संधि अस्तित्व में है, वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 1949 में स्थापित की गई थी। इस संधि में 196 देश शामिल हैं। युद्धबंदियों के अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए जिनेवा कन्वेंशन में कई नियम दिए गए हैं। इसके अनुच्छेद 3 के मुताबिक युद्ध के दौरान घायल होने वाले युद्धबंदी का अच्छे तरीके से उपचार होना चाहिए। 1859 में इटली और फ्रांस तथा ऑस्ट्रिया के बीच हुए सोलफेरिनो युद्ध के दौरान एक स्विस कारोबारी हेनरी ड्यूनांट घायल सैनिकों की दशा देखकर बहुत आहत हुए थे। उन्होंने युद्ध की विभीषिका पर एक किताब लिखी, *मेमोरी ऑफ सोलफेरिनो,* जो कि आगे चलकर रेड क्रॉस की स्थापना का आधार बनी। इसी पृष्ठभूमि में 22 अगस्त, 1864 को पहले जिनेवा कन्वेंशन का जन्म हुआ। हेनरी को उनके इस योगदान के लिए 1901 में शांति के पहले नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिनेवा संधि के तहत युद्धबंदियों को डराया-धमकाया नहीं जा सकता और न ही उन्हें अपमानित किया जा सकता है।

तालिबान के खिलाफ महिलाएं

काबुल में सात सौ महिलाओं ने इकट्ठा होकर तालिबान के खिलाफ और अपनी आजादी के पक्ष में बातें रखीं।

न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए फातिमा फैजी, डेविड ज्यूकिनो

यह एक विरल दृश्य था। अफगानिस्तान में प्रगति के अट्ठारह साल के बाद देश भर से सात सौ महिलाएं काबुल में महिला अधिकारों पर आयोजित एक कॉन्फ्रेंस में अमेरिका को संदेश देने के लिए इकट्ठा हुईं, जिसने तालिबान से अब एक दौर की वार्ता पूरी कर ली है। इन महिलाओं ने कहा कि हम शांति चाहती हैं, लेकिन अपने अधिकारों की कीमत पर नहीं। अफगानी यह समझ पाने में नाकाम हैं कि तालिबान के साथ वार्ता से उन्हें क्या हासिल होगा, जबकि उनके साथ लड़ाई भी कम भीषण नहीं रही है। अमेरिकी कूटनीतिज्ञों ने दोहा में तालिबान के साथ बातचीत की, लेकिन इस वार्ता में अफगानिस्तान शामिल नहीं था।

कुछ अफगानी औरतों को यह आशंका है कि इस वार्ता से तालिबान फिर से सत्ता में आ सकते हैं, जिससे लड़कियों और महिलाओं को फिर से वैसे प्रतिबंधों और फतवों का सामना करना पड़ सकता है, जैसा कि 2001 में उन्हें सत्ता से बाहर किए जाने से पहले तक करना पड़ा था। तब तालिबान के फतवों का उल्लंघन करने के कारण औरतों की प्रायः

पिटाई होती थी। उस कॉन्फ्रेंस में एक औरत नरगिस कुर्बानी ने राष्ट्रपति अशरफ गनी से कहा कि आपको हत्यारों के साथ बातचीत करने के बजाय उन्हें जेल में बंद करना चाहिए। तालिबान ने 1997 में नरगिस के पति की हत्या कर दी थी और बाद में उसके सैनिक बेटे को जख्मी कर दिया था। इस कॉन्फ्रेंस में आईं महिलाओं में ज्यादातर शहरी इलाकों से थीं। उन महिलाओं ने मेकअप कर रखा था। अनेक महिलाओं ने स्कार्फ से अपने बाल ढक रखे थे, लेकिन कुछ ने अपने बाल खुले भी रखे थे। वहां मौजूद महिलाएं मुल्क की औरतों की आजादी के बारे में गीत गाते हुए छोटा अफगानी झंडा लहरा रही थीं। उन्होंने तालिबान के दौर के पहले का एक वीडियो भी देखा, जिसमें कुछ महिलाएं आधुनिक लिबास में थीं। कॉन्फ्रेंस में मौजूद अशरफ गनी की पत्नी रूला गनी ने महिलाओं से कहा कि वे बेहिचक अपनी बात कहें। उन्होंने अपने भाषण में इसका जिक्र भी किया कि अफगानी महिलाओं के पास अपनी आवाज है और आज वे बेखौफ होकर अपनी बात रख रही हैं।

अशरफ गनी ने अपने भाषण में सीधे-सीधे यह तो नहीं कहा कि शांति वार्ता के बाद जो नई सरकार बनेगी, उसमें महिलाओं के अधिकारों की कितनी सुरक्षा की जाएगी, लेकिन उन्होंने यह जरूर कहा कि महिलाओं को पहले दबाया जाता था, लेकिन आज स्थिति बदल गई है। महिलाओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज आप शिकार नहीं हो, बल्कि भविष्य बना रही हो। गनी के भाषण की काफी तारीफ हुई, लेकिन कुछ महिलाओं का कहना था कि तालिबान के साथ शांति समझौते में महिलाओं की स्वतंत्रता की गारंटी भी होनी चाहिए। वहां मौजूद अकीला मुस्तफावी ने कहा कि यहां तक पहुंचने में हमें काफी समय लगा है। हम अब पुराने दौर में कतई नहीं लौट सकतीं।

52 साल की लतीफा ने कहा कि मैं यहां यह संदेश देने के लिए आई हूं कि मैं अपनी बेटियों को मेरी तरह गुलामी में नहीं जीने देना चाहती।

सूत्र

>> जॉर्ज ईस्टमैन

किराये के कमरे से हो सकती है नई शुरुआत

मेरा जन्म 1854 में वाटरविले, न्यूयॉर्क में हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद चौदह वर्ष की उम्र में मैंने स्कूल छोड़ दिया और एक बीमा कंपनी में काम करने लगा। दस वर्ष बाद मैं रोचेस्टर सेविंग बैंक में मुनीम बन गया। हालांकि व्यवसाय ही मेरे लिए सब कुछ नहीं था, मुझे घूमना काफी पसंद था। एक बार मैंने कैरिबियाई द्वीप हिसानियोला की यात्रा की योजना बनाई। मेरे एक सहकर्मी ने मुझे सुझाया कि मैं अपनी यात्रा की तस्वीरें लूं। इसके लिए मैं अपना पहला कैमरा खरीदने पहुंचा। उस समय फोटोग्राफी आसान काम नहीं था। फोटोग्राफरों को कंप्यूटर के मॉनीटर के बराबर कैमरा, उसे रखने के लिए स्टैंड, कांच की प्लेटें, प्लेट होल्डर, और अंधेरे में फोटो डेवलप करने के लिए एक टेंट रखना पड़ता था। इतना सारा तामझाम देखकर मैंने यात्रा में कैमरा ले जाने का इरादा तो छोड़ ही दिया, फोटोग्राफी को ज्यादा आसान बनाने के प्रयोगों में जुट गया। हालांकि मैंने कभी रसायन विज्ञान नहीं पढ़ा था, लेकिन प्रयोग करना शुरू किया और अंततः कांच की सूखी प्लेट तैयार की। 1880 में मुझे अपने आविष्कार का पेटेंट मिल गया और मैंने किराये के कमरे में रात को सूखी प्लेट बनाने का काम शुरू कर दिया, जबकि दिन में बैंक की नौकरी करता था। मेरे शुरुआती ग्राहक स्थानीय पेशेवर फोटोग्राफर, कई रिटेल स्टोर और कुछ शौकिया फोटोग्राफर थे। फिर मैंने हेनरी स्ट्रांग के साथ मिलकर नई तकनीक में निवेश किया और ईस्टमैन ड्राई प्लेट कंपनी शुरू की और अपने नए व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बैंक की नौकरी छोड़ दी। मैं कैमरे को पेंसिल की तरह कहीं भी ले जाने लायक सुविधाजनक बनाना चाहता था। इसलिए मैंने कांच की प्लेट के बजाय पारदर्शी फिल्म रोल तैयार की, पहले कागज की, फिर प्लास्टिक की। शुरू में तो मैं अपनी सुविधा के लिए फोटोग्राफी को सरल बनाना चाहता था, लेकिन बाद में मैंने उसकी व्यावसायिक संभावनाओं के बारे में भी सोचा। मैंने एक छोटा-सा उपकरण तैयार किया, जिसमें फिल्म रोल रखा जा सकता था। लेकिन लोग हमारी फिल्म रोल को खरीदते नहीं थे, इसलिए हमने एक ऐसा कैमरा बनाया, जिससे कोई भी व्यक्ति तस्वीरें ले सकता था। व्यावसायिक सफलता के लिए हमने नारा दिया-आप बटन दबाएं, बाकी काम कैमरा खुद करेगा। और इस तरह हमने दुनिया का पहला पोर्टेबल कैमरा तैयार किया, जो जल्द ही बाजार में लोकप्रिय हो गया।

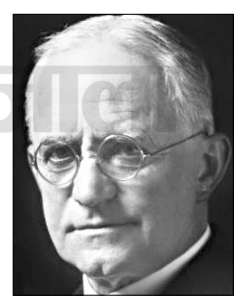

सफलता के लिए दृढ़ निश्चय, जुनून और अपने काम के प्रति लगन बेहद जरूरी है।

इस हफ्ते के शब्द

सौरभ चौधरी

सौरभ चौधरी ने आईएसएसएफ वर्ल्ड कप की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में वर्ल्ड रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता।

ग्रिफ्ट (GRIFT)

माइकल कोहेन के अमेरिकी संसद में गवाही से पहले मरियम वेबस्टर ने इस शब्द को ट्वीट कर ट्रंप पर तंज कसा, इसका अर्थ होता है, अवैध रूप से पैसे लेना।

ओसामा के बेटे पर इनाम

10 लाख डॉलर

का इनाम देने की घोषणा की है अमेरिका ने ओसामा बिन-लादेन के बेटे हमजा बिन-लादेन के बारे में सूचना देने वाले को।